Qiyamat Ka Imtihan (Hindi)

क़ियामत का इम्तिहान

- म-दनी मुन्ने का ख़ौफ़ 1
- जनाज़े को कन्धा देने का त़रीक़ा 17
- एक लाख रुपिया इन्आ़म 6
- पड़ोसी के 15 म-दनी फूल 30
- T.V. कब ईजाद हुवा ? 12

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج۱ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत का इम्तिहान

येह रिसाला **(क़ियामत का इम्तिहान)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : **मजलिसे तराजिम** (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

क़ियामत का इम्तिहान[1]

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह बयान (35 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप अपने दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा होता हुवा मह़सूस फ़रमाएंगे ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : "जिस ने सुब्ह़ व शाम मुझ पर दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा बरोज़े क़ियामत उस को मेरी शफ़ाअ़त नसीब होगी ।" (مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج۱۰ ص۱۶۳ حدیث۱۷۰۲۲)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

म-दनी मुन्ने का ख़ौफ़

आधी रात को एक छोटा बच्चा अचानक उठ बैठा और चीख़ चीख़ कर रोने लगा । वालिद साह़िब घबरा कर बेदार हो गए और बोले : ऐ मेरे लाल ! क्या हो गया ? बच्चा रोते हुए बोला :

1 : येह बयान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने बाबुल मदीना कराची के अ़लाक़े पीर कॉलोनी में होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (अन्दाज़न जुमादल ऊला 1422 सि.हि./26-07-2001) में फ़रमाया था । तरमीम व इज़ाफ़े के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है । **मजलिसे मक-त-बतुल मदीना**

''अब्बाजान ! कल जुमा'रात है लिहाज़ा उस्ताद साह़िब पूरे हफ़्ते के अस्बाक़ का इम्तिह़ान लेंगे मैं ने पढ़ाई पर तवज्जोह नहीं दी, कल मुझे मार पड़ेगी।'' येह कहते हुए बच्चा ''हाए हूं, हाए हूं'' करने लगा। इस पर वालिद साह़िब की आंखों में आंसू आ गए और अपने नफ़्स को मुख़ात़ब कर के कहने लगे **:** इस बच्चे को सिर्फ़ एक हफ़्ते का ह़िसाब देना है और उस्ताद को चक्मा (या'नी धोका) भी दिया जा सकता है इस के बा वुजूद येह रो रहा है और मारे ख़ौफ़ के इसे नींद नहीं आ रही और आह ! आह ! आह ! मुझे तो पूरी ज़िन्दगी का ह़िसाब उस वाह़िदे क़ह्हार جَلَّ جَلَالُہٗ को देना है जिसे कोई चक्मा (या'नी धोका) नहीं दे सकता, मुझे **क़ियामत का इम्तिह़ान** दरपेश है मगर मैं ग़ाफ़िल हो कर सो रहा हूं, आख़िर मुझे कोई ख़ौफ़ क्यूं नहीं आ रहा ! (دُرَّۃُ النّاصِحین ص۲۹۵ بِتَغَیُّر)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत में हमारे लिये इब्रत के मु-तअ़द्दद **म-दनी फूल** हैं, आप भी ग़ौर फ़रमाइये मैं भी सोचता हूं। एक बच्चा, उस की सोच और उस के वालिद की म-दनी सोच देखिये ! बच्चा मद्रसे के ''ह़िसाब'' के ख़ौफ़ से रो रहा है और बाप क़ियामत के ह़िसाब की सख़्ती को याद कर के आबदीदा है।

करीम ! अपने करम का सदक़ा लईमे बे क़द्र[1] को न शरमा

तू और गदा से ह़िसाब लेना गदा भी कोई ह़िसाब में है

(येह आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی عَلَیْہ का मक़्त़अ़ है, दोनों जगह ''रज़ा'' की जगह सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ ने अपनी निय्यत से ''गदा'' कर दिया है)

1 **:** लईमे बे क़द्र या'नी निकम्मा कमीना

वलिय्युल्लाह की दा'वत की हिकायत

हज़रते सय्यिदुना हातिमे **असम** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم को एक मालदार शख़्स ने **ब इसरार** दा'वते तआम दी, फ़रमाया : मेरी येह **तीन शर्तें** मानो तो आऊंगा, **(1)** मैं जहां चाहूंगा बैठूंगा **(2)** जो चाहूंगा खाऊंगा **(3)** जो कहूंगा वोह तुम्हें करना पड़ेगा । उस मालदार ने वोह तीनों शर्तें मन्ज़ूर कर लीं । **वलिय्युल्लाह** की ज़ियारत के लिये बहुत सारे लोग जम्अ हो गए । वक़्ते मुक़र्ररा पर **हज़रते** सय्यिदुना हातिमे **असम** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم भी तशरीफ़ ले आए और जहां लोगों के **जूते** पड़े थे वहां बैठ गए । जब खाना शुरूअ हुवा, सय्यिदुना हातिमे **असम** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने अपनी झोली में हाथ डाल कर **सूखी रोटी** निकाल कर तनावुल फ़रमाई । जब सिल्सिलए तआम का इख़्तिताम हुवा, मेज़बान से फ़रमाया : "चूल्हा लाओ और उस पर **तवा** रखो ।" हुक्म की ता'मील हुई, जब आग की तपिश से **तवा** सुर्ख़ अंगारा बन गया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उस पर नंगे पाउं खड़े हो गए और फ़रमाया : **"मैं ने आज के खाने में सूखी रोटी खाई है ।"** येह फ़रमा कर **तवे** से नीचे उतर आए और हाज़िरीन से फ़रमाया : अब आप हज़रात भी बारी बारी इस **तवे** पर खड़े हो कर जो कुछ अभी खाया है उस का हिसाब दीजिये । येह सुन कर लोगों की चीख़ें निकल गईं, **ब-यक** ज़बान बोल उठे : या सय्यिदी ! हम में इस की ताक़त नहीं, (कहां येह **गर्म गर्म तवा** और कहां हमारे नर्म नर्म क़दम ! हम तो गुनहगार दुन्यादार लोग हैं) आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : **जब** इस दुन्यवी गर्म तवे पर खड़े हो कर आज सिर्फ़ एक वक़्त के खाने की ने'मत का हिसाब नहीं दे

सकते तो कल बरोज़े क़ियामत आप ह़ज़रात ज़िन्दगी भर की ने'मतों का ह़िसाब किस त़रह़ देंगे ! फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पारह 30 **सू-रतुत्तकासुर** की आख़िरी आयत की तिलावत फ़रमाई :

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَىِٕذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ﴿۸﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से ने'मतों से पुरसिश होगी ।

येह रिक़्क़त अंगेज़ इर्शाद सुन कर लोग दहाड़ें मार कर रोने और गुनाहों से तौबा तौबा पुकारने लगे । (مُلَخَّص از تذکرۃ الاولیاء، الجزء الاوّل ص ۲۲۲) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सदक़ा प्यारे की ह़या का कि न ले मुझ से ह़िसाब
बख़्श बे पूछे लजाए[1] को लजाना[2] क्या है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ियामत के 5 सुवालात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम ख़्वाह रोएं या हंसें जागें या ग़फ़्लत की नींद सोते रहें **क़ियामत का इम्तिहान** बरह़क़ है । "तिरमिज़ी शरीफ़" में इस इम्तिहान के बारे में फ़रमाया जा रहा है : इन्सान उस वक़्त तक क़ियामत के रोज़ क़दम न हटा सकेगा जब तक कि इन पांच सुवालात के जवाबात न दे ले ﴿1﴾ तुम ने ज़िन्दगी कैसे बसर की ? ﴿2﴾ जवानी

1 : लजाए या'नी शरमिन्दे । 2 : शरमिन्दा करना

कैसे गुज़ारी ? ﴿3﴾ माल कहां से कमाया ? और ﴿4﴾ कहां कहां ख़र्च किया ? ﴿5﴾ अपने इल्म के मुताबिक़ कहां तक अमल किया ?

(ترمذی ج٤ ص١٨٨ حدیث٢٤٢٤)

इम्तिहान सर पर है

आज दुन्या में जिस तालिबे इल्म का इम्तिहान क़रीब आ जाए वोह कई रोज़ पहले ही से परेशान हो जाता है, उस पर हर वक़्त बस एक ही धुन सुवार होती है : ''इम्तिहान सर पर है'' वोह रातों को जाग कर उस की तय्यारी और अहम सुवालात पर ख़ूब कोशिश करता है कि शायद येह सुवाल आ जाए शायद वोह सुवाल आ जाए, हर इम्कानी सुवाल को हल करता है हालां कि दुन्या का इम्तिहान बहुत आसान है, इस में धांदली हो सकती है, रिश्वत भी चल सकती है, जब कि इस का हासिल फ़क़त इतना कि काम्याब होने वाले को एक साल की तरक़्क़ी मिल जाती है जब कि फ़ेल होने वाले को जेल में नहीं डाला जाता, सिर्फ़ इतना नुक़्सान होता है कि एक साल की मिलने वाली तरक़्क़ी से उस को महरूम कर दिया जाता है । देखिये तो सही ! इस दुन्यवी इम्तिहान की तय्यारी के लिये इन्सान कितनी भागदौड़ करता है, हत्ता कि नींद कुशा गोलियां खा खा कर सारी रात जाग कर इस इम्तिहान की तय्यारी करता है मगर अफ़्सोस ! उस **क़ियामत के इम्तिहान** के लिये आज मुसल्मान की कोशिश न होने के बराबर है जिस का नतीजा काम्याब होने की सूरत में जन्नत की न ख़त्म होने वाली अ-बदी राहतें और फ़ेल होने की सूरत में दोज़ख़ की होलनाक सज़ाएं !

पेश्तर मरने से करना चाहिये
मौत का सामान आख़िर मौत है

मुसल्मानों के साथ साज़िशें

आह ! आज मुसल्मानों के साथ ज़बर दस्त साज़िशें हो रही हैं, आहिस्ता आहिस्ता इस्लाम की **महब्बत** दिलों से दूर की जा रही है, अ-ज़-मते मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सीनों से निकाला जा रहा है, सुन्नते मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मिटाया जा रहा है, जो कुछ हमारे मुआ-शरे में हो रहा है उस पर ग़ौर तो फ़रमाइये ! अफ़्सोस ! शादियों और ख़ुशी के मवाक़ेअ़ पर मुसल्मान सड़कों पर नाचते नज़र आ रहे हैं, शर्मो ह़या का पर्दा चाक कर दिया गया है ।

वल्वला सुन्नते महबूब का दे दे मालिक
आह ! फ़ेशन पे मुसल्मान मरा जाता है

एक लाख रुपिया इन्आ़म

बहर ह़ाल इस्लाम दुश्मन त़ाक़तों की येह साज़िशें अभी से नहीं अ़र्से से चल रही हैं कि पहले मुसल्मानों को सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों से दूर कर दो, इन्हें ऐशो इशरत का आ़दी बना डालो फिर जितना चाहो इन को बे वुक़ूफ़ बनाओ और इन पर राज करो । मैं समझता हूं कि आज कल ब मुश्किल चार या पांच फ़ीसद मुसल्मान नमाज़ पढ़ते होंगे या'नी 95 फ़ीसद मुसल्मान शायद नमाज़ ही नहीं पढ़ते और जितने पढ़ते हैं उन में भी शायद हज़ारों में इक्का दुक्का मुसल्मान ऐसा होगा जिस को ज़ाहिरी व बात़िनी आदाब के साथ नमाज़ पढ़ना आती होगी ! इस वक़्त कसीर इज्तिमाअ़ है, इन में एक से एक ता'लीम याफ़्ता होगा कोई मास्टर होगा तो कोई डॉक्टर, कोई

इन्जीनियर होगा तो कोई अफ़्सर । उ़-लमाए किराम के इ़लावा लाखों आ़म मुसल्मानों के इज्तिमाअ़ में अगर **एक लाख रुपै** दिखा कर येह सुवाल किया जाए कि बताइये नमाज़ के कितने अरकान हैं ? दुरुस्त जवाब देने वाले को एक लाख रुपै इन्आ़म दिया जाएगा ! शायद लाख रुपै मह़फ़ूज़ ही रहें । क्यूं ? इस लिये कि दुन्या का एक से एक फ़न सीखा मगर नमाज़ के अरकान सीखने की त़रफ़ तवज्जोह ही न रही ! आज कल नमाज़ पढ़ने वाले को भी शायद ही येह मा'लूम हो कि नमाज़ के कितने अरकान हैं, सज्दा कितनी हड्डियों पर किया जाता है या वुज़ू में कितने फ़र्ज़ हैं ।

काम दीं से रख, न रख दुन्या से काम फिर न सर गरदान आख़िर मौत है
दौलते दुन्या को नफ़्अ़ समझा है दीं का है नुक़्सान आख़िर मौत है

बाप का जनाज़ा

बाप का जनाज़ा रखा हुवा है मगर मॉडर्न बेटा मुंह लटकाए दूर खड़ा है, बेचारा नमाज़े जनाज़ा पढ़ना नहीं जानता ! क्यूं ? इस लिये कि मरने वाले बद नसीब बाप ने बेटे को सिर्फ़ दुन्यवी ता'लीम ही दिलवाई थी, फ़क़त़ दौलत कमाने के गुर सिखाए थे, सद करोड़ अफ़्सोस ! नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा नहीं बताया था, अगर बाप ने नमाज़े जनाज़ा सिखाई होती, क़ुरआने पाक की ता'लीम दिलवाई होती, सुन्नतों पर अ़मल करने की आ़दत डलवाई होती तो मरने के बा'द बेटा दूर क्यूं खड़ा होता, आगे बढ़ कर ख़ुद नमाज़े जनाज़ा पढ़ाता और ख़ूब ख़ूब ईसाले सवाब करता । आह ! इसे ईसाले सवाब करना भी नहीं आता ! हाए ! हाए ! मरने वाले बाप की बद नसीबी !

घर के बाहर ईसाले सवाब मगर अन्दर.....?

एक इस्लामी भाई ने मुझे **मर्कज़ुल औलिया लाहोर** का येह वाक़िआ़ सुनाया कि हमारा एक रिश्तेदार माल कमाने पाकिस्तान से बाहर गया और कमा कमा कर उस ने रंगीन T.V. और V.C.R. घर भेजा, फिर ख़ुद जब वत़न आया, तो उस का इन्तिक़ाल हो गया । इस्लामी भाई का कहना है कि मेरा बड़ा भाई रिश्तेदारी के लिहाज़ से मर्हूम के दसवें में **मर्कज़ुल औलिया** लाहोर गया । जब घर के क़रीब पहुंचा तो देखा कि बाहर क़ुरआन ख़्वानी हो रही है और फ़ातिह़ा के लिये देगें पक रही हैं । जब घर के अन्दर गया तो येह देख कर ह़ैरान रह गया कि **मर्हूम** के बीवी और बच्चे V.C.R. पर फ़िल्म देखने में मश्ग़ूल हैं ! घर के बाहर ईसाले सवाब और **मुर्दे** के घर के अन्दर उसी के लाए हुए V.C.R. पर مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इरतिकाबे गुनाह हो रहा था !

ईमां पे मौत बेहतर ओ नफ़्स !
तेरी नापाक ज़िन्दगी से

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

दीन से दूर किया जा रहा है

अपनी औलाद से **मह़ब्बत** करने वालो ! अगर अपने बच्चों को फ़िल्में डिरामे देखने के लिये T.V. और V.C.R. ले कर दोगे तो शायद वोह तुम्हारी नमाज़े जनाज़ा भी न पढ़ पाएंगे बल्कि क़ब्र पर सह़ीह़ मा'नों में फ़ातिह़ा भी नहीं पढ़ सकेंगे । जिन के पेशे नज़र **क़ियामत का इम्तिहान** होता है उन का दिल जलता है कि हमारे दिलों में इस्लाम की जो थोड़ी बहुत **मह़ब्बत** है वोह भी निकाली जा रही है । देखिये ! **हस्पानिया** (स्पेन) जो कभी इस्लाम का मर्कज़ था वहां मस्जिदों पर ताले डाल दिये गए !

बा'ज़ ऐसे ममालिक भी हैं जहां क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना तो दूर की बात, रखने ही पर पाबन्दी है। दुश्मनाने इस्लाम की त़रफ़ से येह साज़िश की जा रही है कि इन मुसल्मानों के दिलों से दीन की **महब्बत** निकाल लो। बेशक येह लोग अपने आप को मुसल्मान कहें लेकिन इन को अन्दर से ख़ाली कर दो।

कस्रते औलाद सरवत पर ग़ुरूर
क्यूं है ऐ ज़ीशान आख़िर मौत है

मुसल्मान को मुसल्मान कब छोड़ा है ?

एक पाकिस्तान आ़लिम का किसी ग़ैर मुस्लिम मज़्हबी रहनुमा से जो मुका-लमा हुवा, उसे अपने अन्दाज़ में अ़र्ज़ करता हूं : दौराने गुफ़्त-गू ग़ैर मुस्लिम रहनुमा ने बताया कि पाकिस्तान में हमारे मज़्हब की तब्लीग़ पर ज़रे कसीर ख़र्च होता है। उस आ़लिम साहिब ने पूछा : तुम लोगों ने अब तक कितने फ़ीसद मुसल्मानों का मज़्हब तब्दील किया है ? उस ने कहा : बहुत थोड़ों का। तो उस आ़लिम ने फ़ातेह़ाना अन्दाज़ में कहा : इस का मत़लब येह कि तुम्हारी तह़रीकें हमारे मुल्क में नाकाम हैं। इस पर वोह हंस कर कहने लगा : मौलवी साहिब ! येह सह़ीह़ है कि मुसल्मानों की ज़ियादा ता'दाद को हम-मज़्हब बनाने पर हमें काम्याबी ह़ासिल नहीं हुई लेकिन येह भी तो देखो कि हम ने मुसल्मान को अ़-मली त़ौर पर मुसल्मान कब छोड़ा है ? क्या आप **क्लीन शेव** और पेन्ट शर्ट में कसे कसाए मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम में इम्तियाज़ कर सकते हैं ? आप के **एक मॉडर्न** मुसल्मान और एक ग़ैर मुस्लिम को बराबर बराबर खड़ा कर दिया जाए तो क्या आप शनाख़्त कर लेंगे कि इन में मुसल्मान कौन सा है ? इस पर आ़लिम साहिब ला जवाब हो गए ! **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह** ह़क़ीक़त है कि مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारी वज़्अ़ क़त़्अ़ और लिबास

में से अब मुसल्मानों की ज़ाहिरी अ़लामतें तक़रीबन रुख़्सत हो चुकीं, सुन्नतों से बे इन्तिहा दूरी हो गई, जिन का चेहरा नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत के मुताबिक़ हो शायद ऐसे मुसल्मान अब दुन्या में एक फ़ीसद भी न रहे !

शैत़ान की साज़िश

अफ़्सोस ! तक़रीबन 99 फ़ीसद मुसल्मान आज ग़ैर मुस्लिमों जैसे चेहरे और लिबास में मल्बूस रहते हैं। हो सकता है किसी को मेरी बात ना गवार गुज़रे और इस वजह से उसे मुझ पर ग़ुस्सा भी आ रहा हो, **याद रखिये !** येह शैत़ान ही की एक साज़िश है कि जब इन मुसल्मानों को दीन की कोई बात बताई जाए तो ग़ुस्सा आ जाए और सुनने के बजाए चलते बनें ताकि ज़ेह्न में कोई भलाई की बात घर ही न कर सके। शैत़ान शायद मेरी बातों पर ख़ूब हंस रहा होगा कि ख़्वाह लाखों मुसल्मान **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल में आ गए हों तब भी इस से क्या होगा ! दुन्या में करोड़हा करोड़ ऐसे हैं जो दाढ़ी मुंडवा कर या एक मुठ्ठी से घटा कर दुश्मनाने इस्लाम जैसा चेहरा बनाए और लिबास अपनाए हुए हैं। आज कल के बे शुमार मुसल्मानों की बे अ़-मली के बाइ़स ग़ालिबन मुबल्लिग़ीने दा'वते इस्लामी से कहता होगा तुम चाहे कितना ही ज़ोर लगा लो मगर लोग अब तुम्हारी बातों में आने वाले नहीं, मैं ने इन का तहज़ीबो तमद्दुन यक्सर बदल कर रख दिया है, इन के चेहरे और लिबास तुम्हारे महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के मुताबिक़ नहीं बल्कि मेरे मतवालों और जहन्नम में मेरे साथ रहने वालों जैसे ही रहेंगे। मैं इन

को लज़्ज़ाते नफ़्सानी में फंसाए ही रखूंगा।

सरवरे दीं लीजे अपने ना तुवानों की ख़बर
नफ़्सो शैतां सय्यिदा कब तक दबाते जाएंगे

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

गुनाहों के आलात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! पहले पहल रेडियो पाकिस्तान पर "आप की फ़रमाइश" के उ़न्वान से रेडियो पर गाने सुनाए जाते थे मगर हर किसी को उस की अपनी मरज़ी के मुत़ाबिक़ फिर भी गाना सुनना नहीं मिलता था, फिर **टेप रेकॉर्डर** का सिल्सिला चला और हर कोई अपनी मरज़ी के गाने सुनने लगा। हो सकता है कि कोई कहे मैं तो टेप रेकॉर्डर में बयान और ना'तें वग़ैरा सुनता हूं, आप दुरुस्त फ़रमाते हैं मगर मैं अक्सरिय्यत की बात कर रहा हूं, यक़ीनन अब हज़ारों बल्कि लाखों में शायद कोई मुसल्मान ऐसा हो जो फ़क़त़ तिलावत, ना'तें और बयान सुनने के लिये टेप रेकॉर्डर ख़रीदता हो, अक्सरिय्यत गाने ही सुनने के लिये लेते हैं। बल्कि कई बार सुन्नतों का दर्द रखने वाले इस्लामी भाई मुझ से अपना दुख बयान करते हैं कि हम जब कभी आप के सुन्नतों भरे बयान की केसिट चलाते हैं, घर वाले लड़ाई करते और ज़बर दस्ती फ़िल्मी गानों के केसिट चलाते हैं हमारी तज़्लील करते और आप (सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ) को भी बुरा भला कहते हैं। आह ! **या रसूलल्लाह !**

ठुकराए कोई दुरकारे कोई, दीवाना समझ कर मारे कोई
सुल्त़ाने मदीना लीजे ख़बर हूं आप के ख़िदमत गारों में

T.V. कब ईजाद हुवा ?

लोगों को मज़ीद अय्याशियों में धकेलने के लिये शैतान ने 1925 सि.ई. में T.V. चलवा दिया । शुरूअ़ शुरूअ़ में येह ग़ैर मुस्लिमों के पास ही था, इस के बा'द मुसल्मानों के पास और पाकिस्तान में भी आ पहुंचा । शुरूअ़ शुरूअ़ में बड़े शहरों के ख़ास ख़ास पार्कों वग़ैरा में लगाया जाता था और उस पर लोगों की भीड़ लगी होती थी, फिर आहिस्ता आहिस्ता इस ने घरों में घुसना शुरूअ़ कर दिया, लेकिन अभी वोह ब्लेक एन्ड व्हाइट था, इस के बा'द मज़ीद तफ़रीह़ के लिये रंगीन T.V. भी ईजाद हो गया । फिर कुछ अ़र्से बा'द पाकिस्तान में V.C.R. की आमद हुई और घरों में ग़ैर क़ानूनी सिनेमा घर खुल गए और लोग छुप कर दस दस रुपै में फ़िल्में देखने लगे । उन्हीं दिनों अख़्बार में येह ख़बर आई कि कराची के लिये V.C.R. के इतने इतने लायसन्स जारी कर दिये गए ! अब फ़िल्में देखने का जो "जुर्म" लोग रिश्वतें दे कर और छुप छुप कर करते थे उसी गुनाह को مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ "क़ानूनी तह़फ़्फ़ुज़" ह़ासिल हो गया ! और त़रह़ त़रह़ की गुनाहों भरी गन्दी फ़िल्मों की नुहूसतें लिये V.C.R. घर घर आ गया । याद रखिये ! अगर मुल्की क़ानून किसी गुनाह को जाइज़ कर दे तो वोह जाइज़ नहीं हो जाता ।

कब गुनाहों से कनारा मैं करूंगा या रब !
नेक कब ऐ मेरे अल्लाह ! बनूंगा या रब !

जहन्नम में कूदने की धमकी

एक बार किसी नौ जवान ने सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ से कहा : मैं ने बाबुल मदीना **कराची** के अ़लाक़े रन्छोड़ लाइन में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के एक इज्तिमाअ़ में सुन्नतों भरा बयान सुन कर दाढ़ी मुबारक की सुन्नत अपने चेहरे पर सजा ली है । मेरी मां मुझे दाढ़ी रखने से मन्अ़ करती और धमकी देती है कि अगर तुम ने दाढ़ी नहीं काटी तो मैं ज़हर खा कर मर जाऊंगी । येह नौ जवान कोई काफ़िर ज़ादा नहीं मुसल्मान का लड़का था, उस की मुसल्मान कहलवाने वाली मां उसे सुन्नत से रोकते हुए ख़ुदकुशी की धमकी देती थी, गोया कहती थी : बेटा ! दाढ़ी मुंडवा दे वरना जहन्नम में छलांग लगा दूंगी ! आह ! मुसल्मान कहलाने वालों की सुन्नतों से इस क़दर दूरी ! اَلْاَمَانُ وَالْحَفِيْظ

वोह दौर आया कि दीवानए नबी के लिये हर एक हाथ में पथ्थर दिखाई देता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रहे ! दाढ़ी मुंडाना या एक मुठ्ठी से घटाना दोनों गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं और मां बाप अगर किसी गुनाह का हुक्म दें तो उन की वोह बात नहीं मानी जाएगी कि ह़दीसे पाक में है : ''لَاطَاعَةَ فِیْ مَعصِيَةِ اللّٰهِ اِنَّمَا الطَّاعَةُ فِی الْمَعرُوْفِ'' या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में किसी की इत़ाअ़त जाइज़ नहीं इत़ाअ़त तो सिर्फ़ नेकी के कामों में है । (مُسلِم ص ۱۰۲۳ حدیث ۱۸٤۰) नीज़ जो मां बाप अपनी औलाद को दाढ़ी रखने से रोकते हैं उन को इस से बाज़ रहना ज़रूरी है कि दाढ़ी बढ़ाना सुन्नते रसूल और एक अ़ज़ीमुश्शान नेकी है, नेकी और भलाई से रोकना मुसल्मानों का नहीं ग़ैर मुस्लिमों का शेवा है ।

चुनान्चे बहुत बड़े गुस्ताख़े रसूल वलीद बिन मुग़ीरा के जो दस उ़यूब क़ुरआने करीम में ज़िक्र किये गए हैं उन में से एक ऐ़ब येह भी है :

مَنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ

(پ ۲۹،القلم آیت: ۱۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : भलाई से बड़ा रोकने वाला ।

जाहिल प्रोफ़ेसर

बा'ज़ लोग कहते हैं T.V. के चेनलों पर अच्छी अच्छी बातें भी आती हैं, आती होंगी, मगर मुझे कहने दीजिये कि इस T.V. के गुनाहों भरे और ग़ैर ज़िम्मेदार चेनल्ज़ ने दर ह़क़ीक़त ख़ौफ़नाक तूफ़ाने बद तमीज़ी खड़ा कर दिया है और इस्लामी मुआ़-शरे को तबाही के गहरे गढ़े में झोंक दिया है। कहते हैं : T.V. के किसी चेनल पर एक बार कोई **प्रोफ़ेसर** आया था, सुवाल जवाब हो रहे थे, उस में एक दाढ़ी का सुवाल आया। जवाबन उस ने कहा : "दाढ़ी रखो तो भी ठीक न रखो तो भी ठीक, दाढ़ी न रखना कोई गुनाह नहीं।" अब तो बा'ज़ वालिदैन ने अपने नौ जवान बेटों पर और भी बिगड़ना और ऊल फूल बकना शुरूअ़ कर दिया कि तुम **दा'वते इस्लामी** वालों ने अपने ऊपर क्या क्या सख़्तियां मुसल्लत़ कर ली हैं। इतना बड़ा प्रोफ़ेसर T.V. पर आया और उस ने कहा कि दाढ़ी न रखना गुनाह नहीं और तुम लोग कहते हो गुनाह है । दीन के मुआ़-मले में मा'लूमात से कोरे उस **जाहिल प्रोफ़ेसर** के इस ग़ैर शर-ई मगर बे अ़मल लोगों के नफ़्स को भाने वाले जवाब ने न जाने कितने मुसल्मानों के ज़ेह्न ख़राब कर दिये ! ख़ैर इ़श्क़े रसूल से लबरेज़ दिल से येही सदा आती है :

मुझे प्यारा वोह लगता है, मुझे मीठा वोह लगता है

इमामा सर पे और चेहरे पे जो दाढ़ी सजाता है

नफ़्सो शैत़ान के ख़िलाफ़ जिहाद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कैसी चालाकी के साथ इस्लाम की जड़ों को खोखला किया जा रहा है। क्या हम कुछ नहीं कर सकते ? क्यूं नहीं कर सकते ! दिल तो जला सकते हैं, और इस त़रह़ सवाब तो कमा सकते हैं, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नफ़्सो शैत़ान के ख़िलाफ़ हमारी जंग जारी रहेगी।

सुन्नतें आ़म करें दीन का हम काम करें

नेक हो जाएं मुसल्मान, मदीने वाले !

दाढ़ी मुंडाना ह़राम है

मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने अपने रिसाले ''لَمْعَةُ الضُّحٰى فِى اِعْفَاءِ اللُّحٰى'' में आयाते मुक़द्दसा, अह़ादीसे मुबा-रका और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن के अक़्वाले शरीफ़ा की रोशनी में दाढ़ी बढ़ाना वाजिब और मूंडना या कतरवा कर एक मुठ्ठी से कम कर देना **ह़राम** साबित किया है। दाढ़ी रखने की **अहम्मिय्यत** पर **मक-त-बतुल मदीना** के रिसाले ''काले बिच्छू'' (24 सफ़ह़ात) का ज़रूर मुत़ा-लआ़ कीजिये। अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता आप ने दाढ़ी नहीं रखी तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ तौबा कर के म-दनी चेहरे वाले बन जाएंगे।

सक्रात का दिल हिला देने वाला तसव्वुर !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कभी तन्हाई में बैठ कर सोचिये कि एक वक़्त सक्रात का भी आना है, रूह़ जिस्म से जुदा हो रही होगी, मौत के झटकों पर झटके आ रहे होंगे और आह ! झटके भी ऐसे कि ह़दीसे पाक में है : "मौत का झटका तलवार के हज़ार वार से सख़्त तर है।"[1] हाए ! हाए ! मेरा क्या बनेगा, मैं तो दुन्या की रंगीनियों में खोया रहा हूं, बेहतर से बेहतरीन लज़्ज़तों वाली ग़िज़ाओं और दुन्यवी ने'मतों का शौक़ीन रहा हूं जब कि रिवायत में आया है : बेशक सक्राते मौत की शिद्दत दुन्या की लज़्ज़त के मुत़ाबिक़ है, तो जिस ने ज़ियादा लज़्ज़तें उठाईं उसे नज़्अ़ की तक्लीफ़ भी ज़ियादा होगी।[2] फिर वोह वक़्त भी आ ही जाएगा कि मेरे नाम का शोर पड़ा होगा कि उस का इन्तिक़ाल हो गया, जल्दी जल्दी ग़स्साल को ले आओ ! अब ग़स्साल तख़्ता उठाए चला आ रहा होगा, मुर्दा जिस्म पर चादर उढ़ी होगी, सर से ठोड़ी तक मुंह बंधा होगा, पाउं के दोनों अंगूठे बांध दिये गए होंगे, ग़स्साल ही ग़ुस्ल देगा, कफ़न पहनाएगा, बेटा न ग़ुस्ल देगा, न ही कफ़न पहनाएगा क्यूं कि जूं ही उस ने होश संभाला मैं ने उस को स्कूल का दरवाज़ा दिखाया, बड़ा हुवा तो कॉलेज में दाख़िला दिलाया, फिर आ'ला ता'लीम के लिये अमरीका भिजवाया, दुन्यावी इम्तिह़ानात की तय्यारी का ख़ूब शौक़ बढ़ाया अगर नहीं पढ़ाया तो दीन नहीं पढ़ाया ! ग़ुस्ले मय्यित येह ख़ाक देगा ! इसे तो ख़ुद अपने ज़िन्दा वुजूद के ग़ुस्ल की सुन्नतें भी नहीं मा'लूम, हां हां ! बाप

مدینہ

1 : मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 496, منهاج العابدين ص٨٥ : 2 حلية الاولياء ج٨ ص٢١٨ حديث١١٩٣٤

की आख़िरी ख़िदमत येह भी है कि उस का बेटा ही नहलाए, कफ़न पहनाए, नमाज़े जनाज़ा भी पढ़ाए और अपने हाथों से ही दफ़्नाए। ज़ाहिर है अगर बेटा ग़ुस्ल देगा तो रिक़्क़त के साथ रो रो कर और सुन्नतों को मल्हूज़ रख कर देगा जब कि किराए का ग़स्साल हो सकता है जूं तूं पानी बहा कर, कफ़न पहना कर, पैसे जेब में सरका कर चलता बने ।

मय्यित पर नौह़ा करने का अ़ज़ाब

अब जनाज़ा उठाया जाएगा, घर की औ़रतें चीख़ेंगी, वावेला करेंगी, मैं ने इन को इस से कभी मन्अ़ नहीं किया था कि मय्यित पर **नौह़ा** ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ह़दीसे पाक में है : "**नौह़ा** करने वाली ने अगर मरने से पहले तौबा न की तो क़ियामत के दिन इस त़रह़ खड़ी की जाएगी कि उस पर एक कुरता **क़त़रान** (या'नी राल) का होगा और एक कुरता जरब (या'नी खुजली) का।" **(مُسلِم ص٤٦٥ حدیث٩٣٤)**

जनाज़े को कन्धा देने का त़रीक़ा

बहर ह़ाल जनाज़ा उठा कर लोग चल पड़ेंगे, बेटा शायद सह़ीह़ त़रह़ से कन्धा भी नहीं दे सकेगा क्यूं कि मैं ने इस को सिखाया ही कब था ! इस ग़रीब को क्या पता कि सुन्नत के मुत़ाबिक़ कन्धा किस त़रह़ देते हैं ? **जनाज़े को कन्धा देने का त़रीक़ा** भी सुन लीजिये, **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ किताब, बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल **सफ़ह़ा** 822 पर है : सुन्नत येह है कि यके बा'द दीगरे चारों पायों को कन्धा दे और हर बार दस दस क़दम चले और

पूरी सुन्नत येह कि पहले दहने सिरहाने कन्धा दे फिर दहनी पाएंती फिर बाएं सिरहाने फिर बाईं पाएंती और दस दस क़दम चले तो कुल चालीस क़दम हुए ।

जनाज़े को कन्धा देने के फ़ज़ाइल

ह़दीसे पाक में है : "**जो** जनाज़े को चालीस क़दम ले कर चले उस के चालीस कबीरा गुनाह मिटा दिये जाएंगे" (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج٤ ص٢٦٠ حديث٥٩٢٠) और ह़दीसे मुबा-रका में है : "जो जनाज़े के चारों पायों को कन्धा दे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की ह़त्मी (या'नी मुस्तक़िल) मग़्फ़िरत फ़रमा देगा ।" (الجوهرة النيرة ج ١ ص١٣٩)

बिल आख़िर मेरे नाज़ उठाने वाले अपने हाथों से मुझे तंगो तारीक क़ब्र में उतार कर ऊपर मनों मिट्टी डाल कर तन्हा छोड़ कर चल देंगे । आह !

क़ब्र में मुझ को लिटा कर और मिट्टी डाल कर चल दिये साथी न पास अब कोई रिश्तेदार है
ख़्वाब में भी ऐसा अन्धेरा कभी देखा न था जैसा अन्धेरा हमारी क़ब्र में सरकार है
या रसूलल्लाह ! आ कर क़ब्र रोशन कीजिये
ज़ात बेशक आप की तो मम्बए अन्वार है

(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ब्र की रोशनी का एह़सास न रहा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या में रहने के लिये मकानात बहुत वसीओ अ़रीज़ बनाए जाते हैं लेकिन अफ़्सोस ! क़ब्र सुन्नत के

मुताबिक़ नहीं बन पाती।[1] घरों की फ़राख़ी का तो ख़याल है लेकिन क़ब्र की वुस्अ़त का हमें कोई एह़सास नहीं, दुन्या के **रोशन मुस्तक़्बिल** की तो हर एक को फ़िक्र है मगर क़ब्र की रोशनी की त़रफ़ किसी का ध्यान नहीं। ह़ालां कि देखा जाए तो क़ब्र भी मुस्तक़्बिल में शामिल है। घर में रोशनी का सब एहतिमाम रखेंगे मगर **क़ब्र की रोशनी** की किसे फ़िक्र है ? माल बढ़ाने की हर एक को जुस्त-जू है मगर नेक आ'माल बढ़ाने की किसी को नहीं पड़ी है ! जान की सलामती के लिये इन्तिहाई फ़िक्र मन्द हैं मगर ईमान की सलामती का शुऊ़र बहुत कम हो गया।

माल सलामत हर कोई मंगे दीन सलामत कोई हू

शिफ़ा ख़रीदी नहीं जा सकती

याद रखिये ! दौलत से दवा तो मिल सकती है लेकिन **शिफ़ा** ख़रीदी नहीं जा सकती, अगर दौलत से शिफ़ा मिल सकती होती तो बड़े बड़े अमीर ज़ादे हस्पतालों में एड़ियां रगड़ रगड़ कर हरगिज़ न मरते ! दौलत मुसीबतों और परेशानियों का इलाज नहीं, इस में कोई शक नहीं कि ह़लाल त़रीक़े से मालो दौलत कमाना और उस को जम्अ़ कर के रखना शरअ़न जाइज़ है जब कि इस के हुक़ूक़े वाजिबा अदा करता रहे। मगर दौलत की कसरत की ह़िर्स अच्छी बात नहीं, इस के मन्फ़ी अ-सरात (Side Effects) कसीर हैं। दौलत की ज़ियादत उ़मूमन मा'सियत की त़रफ़ बहुत तेज़ी से ले जाती है, नीज़ आज कल दौलत की कसरत अक्सर मुसीबत का पेशख़ैमा बनती है,

1 : मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ ''म-दनी वसिय्यत नामा'' का ज़रूर मुता-लआ़ फ़रमाइये। इस के आख़िर में ग़ुस्ले मय्यित और कफ़न दफ़न के ज़रूरी अह़काम भी दर्ज हैं।

डाके ज़ियादा मालदारों ही की कोठियों पर पड़ते हैं, उ़मूमन मालदारों ही के बच्चे इग़्वा किये जाते हैं, धाड़ियल (डाकू) चिठ्ठियां भेज कर सरमाया दारों ही से भारी रक़में त़लब करते हैं, फ़ी ज़माना दौलत की कसरत से सुकूने क़ल्ब मिलना तो कुजा उलटा बहुत सों का चैन बरबाद हुवा जाता है, फिर भी ह़ैरत है कि लोग दौलत की जुस्त-जू में मारे मारे फिरते और ह़लाल ह़राम की तमीज़ उठा देते हैं ।

जुस्त-जू में क्यूं फिरें माल की मारे मारे
हम तो सरकार के टुकड़ों पे पला करते हैं

मालदारियां और बीमारियां

बड़े बड़े दौलत मन्द देखे हैं, जो त़रह़ त़रह़ की परेशानियों में मुब्तला हैं, कोई औलाद के लिये तड़पता है, किसी की मां बीमार है, किसी का बाप मरीज़ तो कोई ख़ुद मूज़ी बीमारी में गिरिफ़्तार है, कितने मालदार आप को मिलेंगे जो "**हार्ट अटेक**" से दो चार हैं, कई **शूगर** की ज़ियादती का शिकार हैं और बेचारे मीठी चीज़ें नहीं खा सकते । त़रह़ त़रह़ की खाने की अश्या सामने मौजूद मगर **अरब पती** सेठ साह़िब चख तक नहीं सकते । बेचारे दौलत व जाएदाद के तसव्वुर से दिल बहला सकते हैं, फिर भी दौलत का नशा अ़जीब है कि उतरने का नाम ही नहीं लेता ! यक़ीन जानिये ! ह़लाल व ह़राम की परवाह किये बिग़ैर धन कमाते चले जाना सिर्फ़ और सिर्फ़ नादान इन्सान की धुन है, इतना नहीं सोचता कि आख़िर इतनी दौलत कहां डालूंगा ? फुलां फुलां

सरमाया दार भी तो आख़िर मौत के घाट उतर गया ! उस की दौलत उसे क्या काम आई ? उलटा हुवा येह कि वारिसों में विरसे की तक़्सीम में लड़ाइयां ठन गईं, दुश्मनियां हो गईं, कोर्ट में पहुंच गए और अख़्बारों में छप गए और ख़ानदानी शराफ़तों की धज्जियां बिखर गईं ।

दौलते दुन्या के पीछे तू न जा आख़िरत में माल का है काम क्या !
माले दुन्या दो जहां में है वबाल काम आएगा न पेशे ज़ुल जलाल

क़ब्र के सुवाल व जवाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कभी कभी इस त़रह़ सोचिये ! कि मेरा लाशा मनों मिट्टी तले क़ब्र में दफ़्न कर के अह़बाब चले जाएंगे । येह ख़ुशनुमा गुलिस्तां, लह्लहाती खेतियां, नए मॉडल की चमकीली गाड़ियां, आ़लीशान कोठियां वग़ैरा कुछ भी काम नहीं आएगा । दो ख़ौफ़नाक शक्लों वाले फ़िरिश्ते **मुन्कर नकीर** क़ब्र की दीवारें चीरते हुए तशरीफ़ लाएंगे, लम्बे लम्बे सियाह बाल सर से पाउं तक लटक रहे होंगे, आंखें आग बरसा रही होंगी, अब **इम्तिह़ान** शुरूअ़ होगा, प्यार से नहीं बल्कि वोह झिड़क कर उठाएंगे और इन्तिहाई सख़्त लहजे में सुवालात फ़रमाएंगे : (1) مَنْ رَّبُّکَ؟ या'नी तेरा रब कौन है ? (2) مَادِیْنُکَ या'नी तेरा दीन क्या है ? (3) फिर एक सोहनी मोहनी सूरत दिखाई जाएगी जिस पर फ़िदा होने के लिये हर आ़शिक़ तड़पता है वोह दिलरुबा सूरत दिखा कर पूछा जाएगा : مَا کُنْتَ تَقُوْلُ فِیْ هٰذَا الرَّجُل या'नी इन के बारे में तू क्या कहता था ? ऐ नमाज़ियो ! ऐ मां बाप के फ़रमां बरदारो ! ऐ रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

करने वालो ! ऐ सिर्फ़ ह़लाल रोज़ी कमाने वालो ! ऐ एक मुठ्ठी दाढ़ी सजाने वालो ! ऐ सर पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ ज़ुल्फ़ें बढ़ाने वालो ! ऐ अपने सरों पर इमामा शरीफ़ के ताज सजाने वालो ! ऐ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये **म–दनी क़ाफ़िलों** में सुन्नतों भरा सफ़र फ़रमाने वालो ! ऐ रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म–दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर माह जम्अ़ करवाने वालो ! اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप ज़रूर काम्याब हो जाएंगे, ख़ुदा व मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى الله تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم के करम से आप के जवाबात येह होंगे : رَبِّیَ اللّٰه या'नी मेरा रब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है। دِیْنِیَ الْاِسْلَام या'नी मेरा दीन इस्लाम है। दिलरुबा सूरत वाले की त़रफ़ इशारा कर के कहेंगे : هُوَ رَسُوْلُ اللّٰهِ येह तो मेरे मीठे मीठे आक़ा **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, और झूम झूम कर कह रहे होंगे :

सरकार की आमद मरह़बा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم
दिलदार की आमद मरह़बा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم
क़ब्र में सरकार आएं तो मैं क़दमों में गिरूं
गर फ़िरिश्ते भी उठाएं तो मैं उन से यूं कहूं
इन के पाए नाज़ से मैं ऐ फ़िरिश्तो क्यूं उठूं
मर के पहुंचा हूं यहां इस दिलरुबा के वासित़े

ऐ सलातो सलाम पर झूमने वालो ! नामे **मुह़म्मद** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुन कर अंगूठे चूमने वालो ! जब सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

जल्वा दिखा कर वापस तशरीफ़ ले जाने लगेंगे तो बे क़रार हो कर बे साख़्ता ज़बान पर जारी हो जाएगा :

दिल भी प्यासा नज़र भी है प्यासी क्या है ऐसी भी जाने की जल्दी
ठहरो ठहरो ज़रा जाने आ़लम ! हम ने जी भर के देखा नहीं है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आख़िरी सुवाल का जवाब देने के बा'द जहन्नम की खिड़की खुलेगी और मअ़न (या'नी फ़ौरन) बन्द हो जाएगी और जन्नत की खिड़की खुलेगी और कहा जाएगा : अगर तूने दुरुस्त जवाबात न दिये होते तो तेरे लिये वोह दोज़ख़ की खिड़की थी । येह सुन कर उसे ख़ुशी बालाए ख़ुशी होगी, अब जन्नती कफ़न होगा, जन्नती बिछोना होगा, क़ब्र ता ह़द्दे नज़र वसीअ़ होगी और मज़े ही मज़े होंगे ।

क़ब्र में लहराएंगे ता ह़श्र चश्मे नूर के
जल्वा फ़रमा होगी जब त़ल्अ़त रसूलुल्लाह की

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

जवाबाते क़ब्र में नाकामी के अस्बाब

ख़ुदा न ख़्वास्ता नमाज़ें ज़ाएअ़ करते रहे, झूट बोलते रहे, ग़ीबत करते रहे, ह़राम रोज़ी कमाते रहे, फ़िल्में डिरामे देखते दिखाते और गाने बाजे सुनते सुनाते रहे, मुसल्मानों का दिल दुखाते रहे, अगर रब عَزَّوَجَلَّ नाराज़ हो गया और उस के महबूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रूठ गए, अगर गुनाहों की नुहूसत के बाइ़स مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ईमान बरबाद हो गया, तो फिर

हर सुवाल पर मुंह से येही निकलेगा : هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لَا اَدْرِى (हाए अफ़्सोस ! हाए अफ़्सोस ! मुझे तो कुछ नहीं मा'लूम) हाए ! हाए ! जब से आंख खुली T.V. पर नज़र थी, जब से कानों ने सुना तो फ़िल्मी गाने ही सुने, मुझे क्या मा'लूम ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ क्या है ? मुझे क्या पता दीन क्या है ? मैं ने तो दुन्या में अपनी आमद का मक़्सद सिर्फ़ इसी को समझा था कि बस जैसे बन पड़े माल कमाओ और बीवी बच्चों को निभाओ । अगर कभी किसी ने मेरी आख़िरत की बेहतरी की ख़ातिर मुझे सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत या **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की दा'वत दी भी तो येह कह कर टाल दिया था कि सारा दिन काम कर कर के थक जाता हूं, वक़्त ही नहीं मिलता । इस्लामी भाइयो ! जीते जी तो येह जवाब चलता रहेगा, कारोबार चमक्ता रहेगा, और बेंक बेलेन्स बढ़ता रहेगा लेकिन याद रखिये !

सेठ जी को फ़िक्र थी इक इक के दस दस कीजिये
मौत आ पहुंची कि मिस्टर ! जान वापस कीजिये

बहर ह़ाल जिस का ईमान बरबाद हो चुका था उस से आख़िरी सुवाल कर लेने के बा'द जन्नत की खिड़की खुलेगी और फ़ौरन बन्द हो जाएगी फिर जहन्नम की खिड़की खुलेगी और कहा जाएगा : अगर तूने दुरुस्त जवाब दिये होते तो तेरे लिये वोह जन्नत की खिड़की थी । येह सुन कर उसे ह़सरत बालाए ह़सरत होगी, जहन्नम की त़रफ़ दरवाज़े से उस को गरमी और लपट पहुंचेगी, उसे आग का लिबास पहनाया जाएगा, उस के लिये आग का बिस्तर बिछाया जाएगा, उस पर अ़ज़ाब देने के लिये दो फ़िरिश्ते मुक़र्रर होंगे, जो अन्धे और बहरे होंगे, उन के साथ लोहे

का गुर्ज़ होगा कि पहाड़ पर अगर मारा जाए तो ख़ाक हो जाए, उस हतोड़े से उस को मारते रहेंगे। नीज़ सांप और बिच्छू उसे अ़ज़ाब पहुंचाते रहेंगे, नीज़ आ'माल अपने मुनासिब शक्ल पर मु-तशक्किल हो कर कुत्ता या भेड़िया या और शक्ल के बन कर उस को ईज़ा पहुंचाएंगे।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 110, 111)

आज मच्छर का भी डंक आह ! सहा जाता नहीं
क़ब्र में बिच्छू के डंक कैसे सहेगा भाई ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दौलते दुन्या को अपना सब कुछ समझ बैठना दानिश मन्दी नहीं, येह यादे इलाही से ग़फ़्लत का बाइ़स नहीं बननी चाहिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ईमान वालों को तम्बीह करते हुए पारह 28 **सू-रतुल मुनाफ़िक़ून** की आयत नम्बर 9 में इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! तुम्हारे माल न तुम्हारी औलाद कोई चीज़ तुम्हें **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करे।

येह न कहना कि कोई समझाने वाला नहीं मिला

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रिज़्क़े ह़लाल की त़लब में हरगिज़ ऐसी मसरूफ़िय्यत मत रखिये जो नमाज़ों से ग़ाफ़िल कर दे अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता ह़राम रोज़ी और सूदी कारोबार का सिल्सिला हो तो उसे छोड़ दीजिये, रिश्वत का लैन दैन तर्क कर दीजिये, **देखिये !** मरने के बा'द येह न कहना कि हमें कोई समझाने वाला नहीं मिला था। त़रह़ त़रह़ के गुनाहों में रचे बसे रहने वालों को डर

जाना चाहिये कि अगर गुनाहों के सबब ईमान बरबाद हो गया तो क्या बनेगा ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 24 **सू-रतुज़्ज़ुमर** आयत नम्बर 54 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَاَنِيْبُوْۤا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿۵۴﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ और उस के हुज़ूर गरदन रखो क़ब्ल इस के कि तुम पर अ़ज़ाब आए फिर तुम्हारी मदद न हो ।

या इलाही मेरा ईमान सलामत रखना
दोनों आ़लम में ख़ुदा सायए रह़मत रखना

हम छोटे होते जा रहे हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़िन्दगी का क्या भरोसा ! आप की सिह़्ह़त लाख अच्छी हो मगर क्या आप नहीं जानते कि यकायक ज़ल्ज़ला आ जाता है या बसें, कारें और रेलगाड़ियां उलट जाती हैं या अचानक बम धमाका होता और लाशों के ढेर लग जाते हैं और अगर फ़ज़ा में त़य्यारा फट जाए तो फिर लाशों की शनाख़्त भी दुश्वार हो जाती है, ओ़हदा और मन्सब कुछ भी काम नहीं आता, आदमी एक झटके में मर जाता है, येह अनमोल सांस जल्दी जल्दी निकल रहे हैं, जो एक बार निकल जाता है पलट कर नहीं आता यक़ीनन हर सांस मौत की जानिब एक क़दम है, आप कहते हैं कि मेरे बेटे की 12वीं साल गिरह है, समझते हैं कि बड़ा हो गया है, अगर गहराई में देखें तो आप का बेटा बड़ा नहीं छोटा होता जा रहा है, म-सलन उस ने दुन्या में 25 बरस ज़िन्दा रहना था तो उस

में से 12 साल कम हो चुके, और गोया वोह आधी ज़िन्दगी गुज़ार चुका, यक़ीनन हम सभी रफ़्ता रफ़्ता मौत के क़रीब होते जा रहे हैं, हम सब की उ़म्रें घटती जा रही हैं यूं हम सब बड़े नहीं ''छोटे'' होते जा रहे हैं, घड़ी का गुज़रने वाला हर घन्टा हमारी उ़म्र के एक घन्टे के कम हो जाने की इत्तिलाअ़ देता है।

ग़ाफ़िल तुझे घड़ियाल येह देता है मुनादी
गर्दूं ने घड़ी उ़म्र की इक और घटा दी

दुन्यवी इम्तिहान की अहम्मिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ब्र के इम्तिहान से गुज़र कर **क़ियामत के इम्तिहान** से साबिक़ा पड़ना है। सद करोड़ अफ़्सोस ! हमारे पास इस की कोई तय्यारी नहीं, अलबत्ता मुला-ज़मत की ख़ातिर इन्टरव्यू में काम्याबी ह़ासिल करने के लिये नीज़ स्कूल या कॉलेज के इम्तिह़ान में पास होने के लिये एड़ी चोटी का ज़ोर लगा दिया जाता है। इस मक़ूले : ''مَنْ جَدَّ وَجَدَ'' या'नी ''**जिस ने कोशिश की उस ने पा लिया**'' के मिस्दाक़ अगर सिर्फ़ दुन्यावी इम्तिह़ानात के लिये कोशिश की भी तो हो सकता है दुन्या में आ़रिज़ी ख़ुशियां नसीब हो जाएं लेकिन **क़ियामत के इम्तिह़ान** का क्या होगा ! यक़ीनन एक दिन मरना और क़ब्र व आख़िरत के इम्तिह़ानात से गुज़रना है, उन इम्तिह़ानात में न धोका चलेगा और न ही रिश्वत, दोबारा मौक़अ़ भी नहीं मिलेगा, येह सब कुछ जानने के बा वुजूद लोगों की दुन्यवी इम्तिह़ान की त़रफ़ तो तवज्जोह है मगर **क़ियामत के इम्तिह़ान** से सरासर ग़फ़्लत है।

दुन्या के इम्तिहान के लिये तो आजकल त़-लबा रात भर पढ़ते, नींद आए तो नींद कुशा (ANTI SLEEPING) गोलियां खा कर भी जागते और उस की तय्यारी करते हैं, मगर क्या **क़ियामत के इम्तिहान** के लिये भी हम में से किसी ने कभी कोई रात जाग कर इबादत में बसर की ? दुन्या के इम्तिहान में काम्याबी के लिये पाबन्दी से रोज़ाना स्कूल और कॉलेज का रुख़ करते हैं, क्या **क़ियामत के इम्तिहान** में काम्याबी के लिये सिर्फ़ हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में लगातार शिर्कत करते हैं ? दुन्या के इम्तिहान की तय्यारी के लिये बा'ज़ त़-लबा ट्यूटर की ख़िदमात ह़ासिल करते हैं, तो बा'ज़ एकेडमी या ट्यूशन सेन्टर जॉइन (Join) करते हैं, क्या **क़ियामत के इम्तिहान** की तय्यारी के लिये सुन्नतों भरे म-दनी माह़ोल और आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत इख़्तियार की ? दुन्यवी तरक़्क़ी के लिये आ'ला ता'लीम (Higher Education) ह़ासिल करने के लिये दूसरे शहरों बल्कि दूसरे मुल्कों तक का सफ़र इख़्तियार करते हैं क्या आख़िरत की तरक़्क़ी और **क़ियामत के इम्तिहान** की तय्यारी के लिये भी कभी **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र किया ? तो ऐ सिर्फ़ दुन्या के इम्तिहान के लिये ही कोशिश करने वाले इस्लामी भाइयो ! **क़ियामत के इम्तिहान** की भी तय्यारी शुरूअ़ कर दीजिये कि जिस का काम्याब **जन्नत** की हमेशा रहने वाली ने'मतें पाएगा जब कि इस का नाकाम जहन्नम की आग में जलाया जाएगा । **क़ियामत के इम्तिहान** की तय्यारी में आसानी के लिये **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में लाज़िमी शिर्कत कीजिये, अपने अ़लाक़े में रात को **मद्र-सतुल मदीना** (बराए बालिग़ान)

में क़ुरआने पाक मुफ़्त सीखिये और हर महीने आ़शिक़ाने रसूल के साथ कम अज़् कम तीन दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये नीज़ रोज़ाना फ़िक्रे मदीना कर के **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाइये। **दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र और म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर माह जम्अ़ करवाना** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **आप के लिये क़ियामत के इम्तिहान में काम्याबी का ज़रीआ़ बनेगा।**

लूटने रह़मतें क़ाफ़िलें में चलो पाओगे ब-र-कतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो दूर हों आफ़तें क़ाफ़िले में चलो

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे **नुबुव्वत,** मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा। (اِبنِ عَساکِر ج۹ص۳۴۳)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"राहे मदीना का मुसाफ़िर" के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से पड़ोसी के 15 म-दनी फूल

❁ **8 फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ﴿1﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नेक मुसल्मान की वजह से उस के पड़ोस के 100 घरों से बला दूर फ़रमा देता है। फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई : وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ (پ۳،البقرۃ:۲۵۱) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** "और अगर **अल्लाह** लोगों में बा'ज़ से बा'ज़ को दफ़्अ़ न करे तो ज़रूर ज़मीन तबाह हो जाए" (مجمع الزوائد ج۸ ص۲۹۹ حدیث۱۳۵۳۳) ﴿2﴾ **अल्लाह तआ़ला** के नज़्दीक बेहतरीन पड़ोसी वोह है जो अपने पड़ोसी का ख़ैर ख़्वाह हो (ترمذی ج ۳ ص ۳۷۹ حدیث ۱۹۰۱) ﴿3﴾ वोह जन्नत में नहीं जाएगा, जिस का पड़ोसी उस की आफ़तों से अम्न में नहीं है (مُسلِم ص۴۳ حدیث ۴۶) ﴿4﴾ वोह मोमिन नहीं जो ख़ुद पेट भर खाए और उस का पड़ोसी उस के पहलू में भूका रहे (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ ص۲۲۰ حدیث۳۳۸۹) या'नी कामिल मोमिन नहीं ﴿5﴾ जिस ने अपने पड़ोसी को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी (اَلتَّرغِیب وَالتَّرھِیب ج۳ ص۲۴۱ حدیث ۱۳) ﴿6﴾ जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) मुझे पड़ोसी के **मु-तअ़ल्लिक़** बराबर वसिय्यत करते रहे, यहां तक कि मुझे गुमान हुवा कि पड़ोसी को वारिस बना देंगे (بُخاری ج۴ ص۱۰۴ حدیث۶۰۱۴) ﴿7﴾ जो शख़्स **अल्लाह** और यौमे आख़िरत

पर ईमान रखता है, उसे चाहिये कि वोह अपने पड़ोसी के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आए (مُسلِم ص٤٤ حدیث٤٨) ﴾8﴿ चालीस घर पड़ोसी हैं । (مراسیل ابی داود ص ١٦) ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : इस से चारों त़रफ़ चालीस चालीस घर मुराद हैं । (اَیضًا) ''नुज़्हतुल क़ारी'' में है : पड़ोसी कौन है इस को हर शख़्स अपने उ़र्फ़ और मुआ़-मले से समझता है (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 5, स. 568) ❁ **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : पड़ोसी के हुक़ूक़ में से येह भी है कि उसे सलाम करने में पहल करे, उस से त़वील गुफ़्त-गू न करे, उस के ह़ालात के बारे में ज़ियादा पूछगछ न करे, वोह बीमार हो तो उस की मिज़ाज पुर्सी करे, मुसीबत के वक़्त उस की ग़म ख़्वारी करे और उस का साथ दे, ख़ुशी के मौक़अ़ पर उसे मुबारक बाद दे और उस के साथ ख़ुशी में शिर्कत ज़ाहिर करे, उस की लग़्ज़िशों से दर गुज़र करे, छत से उस के घर में न झांके, उस के घर का रास्ता तंग न करे, वोह अपने घर में जो कुछ ले जा रहा है उसे देखने की कोशिश न करे, उस के ऐबों पर पर्दा डाले, अगर वोह किसी ह़ादिसे या तक्लीफ़ का शिकार हो तो फ़ौरी त़ौर पर उस की मदद करे, जब वोह घर में मौजूद न हो तो उस के घर की ह़िफ़ाज़त से ग़फ़्लत न बरते, उस के ख़िलाफ़ कोई बात न सुने और उस के अहले ख़ाना से निगाहों को पस्त (या'नी

नीची) रखे, उस के बच्चों से नर्म गुफ़्त-गू करे, उसे जिन दीनी या दुन्यवी उमूर का इल्म न हो इन के बारे में उस की रहनुमाई करे (اِحیاءُ العُلوم ج ۲ ص۲٦٧ مُلَخّصاً) ❁ हज़रते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह** बिन मस्ऊद رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ की ख़िदमत में एक शख़्स ने अर्ज़ की : मेरा पड़ोसी मुझे अज़िय्यत पहुंचाता है, मुझे गालियां देता है और मुझ पर सख़्ती करता है। फ़रमाया : अगर उस ने तुम्हारे बारे में **अल्लाह** की ना फ़रमानी की है, तो तुम उस के बारे में **अल्लाह** की इताअत करो (ایضاً ص۲٦٦) ❁ एक बुज़ुर्ग के घर में चूहों की कसरत थी किसी ने अर्ज़ की : हज़रत ! अगर आप बिल्ली रख लें तो अच्छा है। फ़रमाया : मुझे डर है कि चूहा बिल्ली की आवाज़ सुन कर पड़ोसी के घर में चला जाए इस तरह मैं उस के लिये वोह बात पसन्द करने वाला होउंगा जिसे मैं ख़ुद अपने लिये पसन्द नहीं करता (ایضاً۲٦٧) ❁ मन्क़ूल है : फ़क़ीर पड़ोसी क़ियामत के दिन मालदार पड़ोसी का दामन पकड़ कर कहेगा : ऐ मेरे रब ! इस से पूछ, इस ने मुझे अपने हुस्ने सुलूक से क्यूं महरूम किया और मुझ पर अपना दरवाज़ा क्यूं बन्द किया ? (اَیضاً) ❁ एक शख़्स ने अर्ज़ की, **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! फ़ुलानी औरत के **मु-तअल्लिक़** ज़िक्र किया जाता है कि नमाज़ व रोज़ा व स-दक़ा कसरत से करती है मगर येह बात भी है कि वोह अपने पड़ोसियों को ज़बान से तक्लीफ़ पहुंचाती है, फ़रमाया : वोह जहन्नम में है। उन्हों ने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (ترغیب،ترہیب)

अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! फ़ुलानी औ़रत की निस्बत ज़ियादा ज़िक्र किया जाता है कि उस के (नफ़्ली) रोज़ा व स-दक़ा व नमाज़ में कमी है, वोह पनीर के टुकड़े स-दक़ा करती है और अपनी ज़बान से पड़ोसियों को ईज़ा नहीं देती, फ़रमाया : वोह जन्नत में है (مُسندِ اِمام احمد ج۳ص۴۴۱ حدیث۹۶۸۱) ❁ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : पड़ोसी तीन क़िस्म के हैं : बा'ज़ के तीन ह़क़ हैं बा'ज़ के दो और बा'ज़ का एक ह़क़ है, जो पड़ोसी मुस्लिम और रिश्तेदार हो, उस के तीन ह़क़ हैं : ह़क़्क़े जवार और ह़क़्क़े इस्लाम और ह़क़्क़े क़राबत, पड़ोसी मुस्लिम के दो ह़क़ हैं : ह़क़्क़े जवार और ह़क़्क़े इस्लाम और पड़ोसी काफ़िर का सिर्फ़ एक ह़क़्क़े जवार है (شُعَبُ الْاِیمان ج۷ ص۸۳ حدیث۹۵۶۰) ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना **बा यज़ीद बिस्त़ामी** قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی का पड़ोसी आतश परस्त था। यहूदी पड़ोसी सफ़र में गया, उस के बाल बच्चे घर रह गए, रात यहूदी का बच्चा रोता था। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने पूछा : बच्चा क्यूं रोता है ? यहूदन बोली : घर में चराग़ नहीं है, बच्चा अंधेरे में घबराता है। उस दिन से आप रोज़ाना चराग़ में ख़ूब तेल भर कर रोशन कर के यहूदी के घर भेज दिया करते थे। जब यहूदी लौटा तो उस की बीवी ने येह वाक़िआ़ सुनाया। यहूदी बोला : जिस घर में बा यज़ीद का चराग़ आ गया वहां अंधेरा क्यूं रहे ! वोह सब मुसल्मान हो गए। (मिरआत, जि. 6, स. 573, تذکرۃ الاولیاء الجزء الاوّل ص۱۴۲)

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''बहारे शरीअ़त''** हिस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब **''सुन्नतें और आदाब''** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

त़ालिबे ग़मे मदीना व
बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व
बे ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
का पड़ोस

यकुम स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1433 सि.हि.
15-12-2012

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (کنزالعمال)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	नम्बर	उ़न्वान	नम्बर
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	नफ़्सो शैत़ान के ख़िलाफ़ जिहाद	15
म-दनी मुन्ने का ख़ौफ़	1	दाढ़ी मुंडाना ह़राम है	15
वलिय्युल्लाह की दा'वत की ह़िकायत	3	सक्रात का दिल हिला देने वाला तसव्वुर !	16
क़ियामत के 5 सुवालात	4	मय्यित पर नौह़ा करने का अ़ज़ाब	17
इम्तिह़ान सर पर है	5	जनाज़े को कन्धा देने का त़रीक़ा	17
मुसल्मानों के साथ साज़िशें	6	जनाज़े को कन्धा देने के फ़ज़ाइल	18
एक लाख रुपिया इन्आ़म	6	क़ब्र की रोशनी का एह़सास न रहा	18
बाप का जनाज़ा	7	शिफ़ा ख़रीदी नहीं जा सकती	19
घर के बाहर ईसाले सवाब मगर अन्दर..?	8	मालदारियां और बीमारियां	20
दीन से दूर किया जा रहा है	8	क़ब्र के सुवाल व जवाब	21
मुसल्मान को मुसल्मान कब छोड़ा है ?	9	जवाबाते क़ब्र में नाकामी के अस्बाब	23
शैत़ान की साज़िश	10	येह न कहना कि कोई समझाने वाला नहीं मिला	25
गुनाहों के आलात	11	हम छोटे होते जा रहे हैं	26
T.V. कब ईजाद हुवा ?	12	दुन्यवी इम्तिह़ान की अहम्मिय्यत	27
जहन्नम में कूदने की धमकी	13	पड़ोसी के 15 म-दनी फूल	30
जाहिल प्रोफ़ेसर	14	मआख़िज़ो मराजेअ़	35

مآخذ ومراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن مجید	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	الترغیب والترہیب	دارالکتب العلمیۃ بیروت
بخاری	دارالکتب العلمیۃ بیروت	ابن عساکر	دارالفکر بیروت
مسلم	دارابن حزم بیروت	نزہۃ القاری	فرید بک اسٹال مرکزالاولیاء لاہور
ترمذی	دارالفکر بیروت	تذکرۃ الاولیاء	انتشاراتِ گنجینہ تہران
مسندامام احمد	دارالفکر بیروت	منہاج العابدین	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مراسیل ابی داود	افغانستان	احیاء العلوم	دارصادر بیروت
معجم اوسط	دارالکتب العلمیۃ بیروت	درۃ الناصحین	دارالفکر بیروت
شعب الایمان	دارالکتب العلمیۃ بیروت	الجوہرۃ النیرۃ	باب المدینہ کراچی
حلیۃ الاولیاء	دارالکتب العلمیۃ بیروت	بہارشریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
مجمع الزوائد	دارالفکر بیروت	ملفوظات اعلیٰ حضرت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

आज बड़ी गरमी है !

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जब सख़्त गरमी होती है तो बन्दा कहता है : "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" आज बड़ी गरमी है ! ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे **जहन्नम** की गरमी से पनाह दे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दोज़ख़ से फ़रमाता है : "मेरा बन्दा मुझ से तेरी गरमी से पनाह मांग रहा है और मैं तुझे गवाह बनाता हूं कि मैं ने इसे तेरी गरमी से पनाह दी।" और जब सख़्त सर्दी होती है तो बन्दा कहता है : "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" आज कितनी सख़्त सर्दी है ! ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे **जहन्नम** की ज़म-हरीर से बचा। **अल्लाह तआला जहन्नम** से कहता है : "मेरा बन्दा मुझ से तेरी ज़म-हरीर से पनाह मांग रहा है और मैं ने तेरी ज़म-हरीर से इसे पनाह दी।" **सहाबए किराम** عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **जहन्नम** की ज़म-हरीर क्या है ? फ़रमाया : वोह एक गढ़ा है जिस में काफ़िर को फेंका जाएगा तो सख़्त सर्दी से उस का जिस्म टुकड़े टुकड़े हो जाएगा।

(البدور السافرة للسيوطي ص ۴۱۸، حديث ۱۳۹۰)

मक-त-बतुल मदीना
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net